रेवान्त

अप्रैल-सितम्बर 2017

साहित्य और संस्कृति की त्रैमासिक

रेवान्त

साहित्य व संस्कृति की त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 26-27
अप्रैल-सितम्बर 2017

प्रकाशक
ऐश्वर्या सिन्हा

संरक्षक
डा. रूपल अग्रवाल
मैंनेजिंग ट्रस्टी, हेल्प यू ट्रस्ट

प्रधान संपादक
कौशल किशोर

संपादक
डॉ. अनीता श्रीवास्तव

सलाहकार
प्रो. उषा सिन्हा
डा. निर्मला सिंह, संध्या सिंह

उप सम्पादक
विमल किशोर, कुसुम वर्मा, भावना मौर्य,
आभा खरे, रूपा पाण्डेय, सत्या सिंह,
रत्ना श्रीवास्तव

प्रबन्ध सहयोग
इन्दु सिन्हा, साज़िदा सबा,
रोली श्रीवास्तव

संपादकीय कार्यालय
फ्लैट नं. 88, सी-ब्लाक, लेखराज नगीना,
चर्च रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016
मोबाइल : 9839356438, 9621691915,
8400208031
Email : anitasrivastava249@gmail.com
kaushalsil.2008@gmail.com

मूल्य : *30/-* रुपया
वार्षिक सदस्यता : 200 रुपये, पांच वर्ष : 800 रुपये
आजीवन सदस्यता : 3000 रुपये

संस्थाओं के लिए सदस्यता शुल्क
वार्षिक : 250 रुपये, पांच वर्ष : 1000 रुपये
आजीवन : 4000 रुपये
(मनीआर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट द्वारा समस्त भुगतान 'रेवान्त पत्रिका' के नाम से लिये जायेंगे)।

प्रकाशित रचनाओं के विचार से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

इस बार ...

संपादकीय

2017 हमारे लिये अग्रगति का साल : 2
कुप्रथाओं का सामाजिक बहिष्कार जरूरी है... : 4

विशेष

नागभूषण पटनायक : ***अवधेश कुमार सिंह*** : 5
नागार्जुन की कविता, नागभूषण पटनायक की कविताएं

विचार आलेख

नक्सलबाड़ी आंदोलन और हिन्दी कविता : ***चन्द्रेश्वर*** : 11

काल से होड़

जयप्रकाश मानस और मायामृग की कविताएं : 14

जन्म शताब्दी पर आलेख

त्रिलोचन का जीवन संघर्ष और कवि-व्यक्तित्व : ***अजीत प्रियदर्शी*** : 31
ध्वनि ग्राहक कवि-त्रिलोचन : ***श्रीप्रकाश शुक्ल*** : 34
मुक्तिबोध की वैचारिकी और आज का समय : ***जयप्रकाश धूमकेतु*** : 37
सामान्यीकरण का असामान्यीकरण करते कवि मुक्तिबोध : ***शैलेन्द्र चौहान*** : 40

ग़ज़लें

राम कुमार कृषक : 26
सागर त्रिपाठी : 27
स्वप्निल श्रीवास्तव : 28
नसीर अहमद : 30

कहानियाँ

जुल्मी : ***शिवमूर्ति*** : 20
अब मेरी बारी है : ***कविता विकास*** : 50
थीसिस : ***राजवंत राज*** : 54

कविताएं

रमेश दीक्षित, डी.एम. मिश्र, दिनेश प्रियमन : 44
सरिता शर्मा, विमल किशोर, मीता दास, पंखुरी सिन्हा, सत्या सिंह और रोली शंकर : 58

2017 हमारे लिये अग्रगति का साल

यह ऐसा समय है जब इतिहास के पहिये को उल्टी दिशा में ले जाने की कोशिश हो रही है। इतिहास के खलनायकों को नायक बनाकर पेश किया जा रहा है। हिटलर और उसके भारतीय संस्करण का महिमामंडन हो रहा है। गांधी के हत्यारे गोडसे के मन्दिर बनाये जा रहे हैं। उसे देशभक्त का दर्जा दिया जा रहा है। सामाजिक विभाजन, नफरत, हिंसा, अविवेक जैसी मनुष्य विरोधी संस्कृति भारत भूमि में फल फूल रही है। जनतंत्र को भीड़तंत्र में बदला जा रहा है। हत्या के लिए तर्क पेश किये जा रहे हैं, उसे न्याय संगत ठहराने की कोशिश हो रही है। किसी की मृत्यु पर शोक की जगह जश्न मनाया जा रहा है। यह सब ऐसे देश में हो रहा है जहां 'वसुधैव ही कुटुम्बकम' की संस्कृति प्रतिष्ठित रही है। 'निन्दक नियरे राखिए आंगन कुटी छवाय' हमारा नीति-व्यवहार रहा है। आलोचना की संस्कृति हिन्दुस्तान की ताकत रही है। हिन्दू धर्म जो अपनी सहिष्णुता, उदारता व सदाशयता के लिए ख्यात रहा है, उसी की बुनियाद पर चोट की जा रही है।

कहा जाता है कि हरेक नकारात्मकता के साथ सकारात्मकता संघर्षरत रहती है। एक तरफ इतिहास को प्रतिगामी दिशा में ले जाने का काम हो रहा है तो दूसरी तरफ उसकी अग्रगति की चेष्टायें भी है। यह द्वन्द्ववाद का नियम है। कई बार अतीत का संघर्ष और उसकी शानदार उपलब्धियां वर्तमान के अंधकर को भेदने और आगे बढ़ने की राह दिखाती हैं। 2017 का साल ऐसा ही है जिसमें हम मानव मुक्ति और उसकी गरिमा को प्रतिष्ठित करने वाली घटनाओं को याद कर सकते हैं। यह दुनिया की पहली समाजवादी क्रान्ति की शताब्दी का साल है जिसने लुटेरी साम्राज्यवादी-पूंजीवादी सत्ता को रंगमंच से बाहर कर दिया और बता दिया कि इतिहास के रंगमंच पर नये नायकों का अवतरण हो चुका है। भले ही समाजवादी व्यवस्था का आज भौतिक अस्तित्व न हो लेकिन दुनिया के पूंजीवादी शोषक सत्ता को समाजवादी विचार भूत की तरह अब भी सताता है। यह आज भी उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

यह साल हमें महान चंपारण सत्याग्रह की याद दिलाता है। यह भारत के स्वाधीनता आंदोलन और गांधी जी के राजनीतिक जीवन में निर्णायक मोड़ था। जो लोग 'मुक्त होबो मातृभूमि' के स्वप्न के साथ समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तरण के लिए कठिन-कठोर संघर्ष में समर्पित हैं, उनके लिए यह साल नक्सलबाड़ी किसान आंदोलन का अर्द्धशताब्दी वर्ष है। तेभागा और तेलंगाना किसान आंदोलन की परम्परा में यह ऐसा विद्रोह था जिसने अखिल भारतीय प्रभाव सृजन किया और भारतीय विमर्श को नई क्रान्तिकारी अन्तर्वस्तु से समृद्ध किया। उसने भारतीय साहित्य को क्रान्तिकारी आवेग व दिशा प्रदान की। 'रेवान्त' के इस अंक में हम इस आंदोलन के रचनाकारों में प्रमुख नागभूषण पटनायक पर विशेष सामग्री प्रकाशित कर रहे हैं। साथ ही, इस आंदोलन का हिन्दी कविता पर पड़े प्रभाव पर विचार करता आलेख भी है। यह हिन्दी के दो प्रगतिशील कवियों- त्रिलोचन और मुक्तिबोध का सौंवा साल है। इस अंक में उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर उन्हें याद करते हुए आलेख दिये जा रहे हैं।

हमारी सांस्कृतिक दुनिया भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) की 75 वीं वर्षगांठ मना रही है। यह ऐतिहासिक महत्व का ऐसा संगठन है जो राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान पैदा हुआ, तमाम झंझावातों को झेलते हुए 75 साल

की अपनी यात्रा पूरी की। इसकी स्थापना 25 मई 1943 को हुई। स्थापना सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए प्रो. हीरेन मुखर्जी ने लेखकों, कलाकारों, नाटककारों व बुद्धिजीवियों का आहवान किया था कि वे सभी हाथ और दिमाग से काम करने वाले आयें और स्वतंत्रता व सामाजिक न्याय का समाज बनाने के लिए अपने को समर्पित कर दें। इसके पहले अध्यक्ष देश के मशहूर श्रमिक नेता एन एम जोशी थे। संगठन का नाम महान वैज्ञानिक होमी जहांगीर भाभा द्वारा सुझाया गया था। इसका कन्सेप्ट रोम्या रोलां की जन नाट्य संबंधी विचारों पर आधारित था। इसकी मूल अवधारणा थी कि यह जनता का रंगमंच है जिसकी असली नायक जनता है, वही कला का मूल श्रोत है। इप्टा का प्रतीक चिन्ह चित्रकार चित्तो प्रसाद की कृति नगाड़ा और नगाड़ा वादक है जो गहरी सांस्कृतिक जड़ों और समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा की याद दिलाता है।

प्रलेस और इप्टा का आंदोलन मात्र बौद्धिक आंदोलन तक सीमित नहीं था। रचना और विचार के आंदोलन को जन आंदोलन में बदल देने में उसकी महती भूमिका थी। राष्ट्र की स्वाधीनता के साथ उसने सामाजिक प्रश्नों को भी संबोधित किया। बंगाल के दुर्भिक्ष को लेकर इप्टा के कलाकारों द्वारा किये गये कार्यों को क्या भुलाया जा सकता है? इस दौर की खासियत को जरूर रेखांकित किया जाना चाहिए कि कलाकारों में न सिर्फ विचारों के स्तर पर बल्कि उन विचारों को व्यवहार के स्तर पर जीने की प्रवृति थी। हम उस दौर के कलाकारों को डी-क्लास व डी-कास्ट होते हुए देखते हैं। हिन्दी-उर्दू के लेखकों में ही एकता नहीं आई बल्कि बोलियों व भारतीय भाषाओं में भी निकटता आई। इस मायने में यह वास्तविक जन सांस्कृतिक आंदोलन था जिसका फलक राष्ट्रीय था।

इस तरह नवम्बर क्रान्ति से लेकर नक्सलबाड़ी तक, त्रिलोचन-मुक्तिबोध से लेकर प्रलेस-इप्टा तक हमारे पास इतिहास की शानदार विरासत है। इन्हें याद करना वर्तमान का ही संघर्ष है। यह तो ऐसा दौर है जब स्मृति को ही विस्मृत किया जा रहा है। बल्कि कहा जाय तो ऐसी साजिश रची जा रही है जिसमें हम अपने इतिहास को भूल जायें या सत्ता और उसके 'भक्त' जैसा इतिहास बताना चाहते हैं, वहीं नई पीढ़ी के दिल-दिमाग पर अंकित हो। गांधी, भगत सिंह, डॉ अम्बेडकर सभी को खण्डित किया जा रहा है। अपने अनुकूल उनकी छवि गढ़ी जा रही है। रवीन्द्र नाथ, प्रेमचंद, फैज, पाश सभी उनके निशाने पर हैं। यह बात समझी भी जा सकती है कि स्वाधीनता आंदोलन में जिनकी नहीं के बराबर भूमिका रही हो तथा जो अंग्रेजों के साथ बार-बार खड़े नजर आये हों, उनके पास ऐसा इतिहास है ही नहीं जिस पर वे गर्व कर सके। इसलिए आज अपने अतीत और उसकी गौरवशाली परम्परा को याद करना, उसे सहेजना, उससे सीखना विस्मृति के खिलाफ स्मृति का, इतिहास को हड़प लेने व उसे नष्ट-भ्रष्ट करने के खिलाफ वर्तमान में आगे बढ़ने का संघर्ष है।

अगस्त, 2017

कौशल किशोर

कौशल किशोर

कुप्रथाओं का सामाजिक बहिष्कार जरूरी है...

तीन तलाक के संबंध में सुप्रीम कोर्ट का फैसला इस अर्थ में महत्वपूर्ण है कि इस सामाजिक बुराई को खत्म करने की दिशा में यह पहला कदम है जो पहली जीत से कतई कम नहीं है। इसलिए इसका स्वागत हो रहा है और होना भी चाहिए। यह कोर्ट का फैसला है और यह मुस्लिम महिलाओं और महिला संगठनों के लम्बे संघर्ष और प्रयत्न का नतीजा है। इस संबंध में कुछ अपनी पीठ स्वयं थपथपा रहे हैं। जरा इनका चेहरा और चरित्र भी जान लेना चाहिए। ये वे हैं जो स्वयं महिलाओं के मामले में घोर दकियानूस तथा मनुवादी सोच रखते हैं। वे इसे महज वोट की राजनीति के एक हथकण्डे के रूप में देखते हैं। हमने देखा कि तीन तलाक के मुद्दे पर उस समाज की दिलचस्पी सबसे ज्यादा रही जो अपने यहां की गैरकानूनी कुप्रथाओं पर एक शब्द नही बोलता बल्कि अपने जीवन व्यवहार में पितृसत्तात्मक मान्यताओं का पक्षपोषण करता है, उसे बढ़-चढ़ कर लागू करता है।

सच्चाई तो यह है कि किसी भी समाज में सुधार की प्रक्रिया उस समाज के अन्दर से ही शुरू होती है। बाहरी कारक उसमें मददगार हो सकते हैं। तीन तलाक के मुद्दे की लड़ाई भी अन्ततः उसी समाज की महिलाओं और प्रगतिशील महिला संगठनों के अथक और अदम्य संघर्ष से ही लड़ी गई और यहां तक पहुंची है। वह इन्हीं के प्रयत्नों से आगे बढ़ेगी। गौरतलब है कि तीन तलाक का वह रूप, जो 'तलाक' शब्द का तीन बार उच्चारण करके मुस्लिम पुरुष अपनी पत्नियों को तलाक देते थे और जिसे 'तुरन्ता तीन तलाक' से जाना जाता है, को कानूनी रूप से असंवैधानिक घोषित किया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने तलाक के रूपों जिनमें सुलह-समझौते की गुंजाइश रहती है, उसमें कोई संशोधन नहीं किया है।

यह सही है कि तुरन्ता 'तीन तलाक' कानूनी रूप से अब अमान्य हो गया लेकिन क्या सामाजिक रूप से भी अमान्य हो गया? यह होना अभी बाकी है। हमारे यहां तो बहुत सी प्रथाएं हैं जो गैरकानूनी हो गई हैं लेकिन सामाजिक रूप से वह आज भी कायम है, चलन में है। जैसे दहेज प्रथा को ही लिया जा सकता है जो गैरकानूनी है। लेकिन समाज में आज भी बड़े पैमाने पर इसकी स्वीकृति है। देखा तो यह जा रहा है कि लड़की भले ही शिक्षा-दीक्षा व योग्यता में वर से बीस हो, फिर भी दहेज के लिए वरपक्ष का मुंह खूब गोल-गोल खुला रहता है। वह वधुपक्ष से बहुत की अपेक्षा रखता है।

इसलिए यह ज्यादा जरूरी है कि हमारे समाज में व्याप्त दहेज, बाल विवाह, घरेलू हिंसा, तीन तलाक आदि स्त्री विरोधी प्रथाएं गैरकानूनी ही न हो बल्कि वह सामाजिक स्तर पर भी बहिष्कृत हो, सामाजिक चलन में न हो। जिस समाज की ड्राइविंग सीट पर पुरुषसत्ता व धर्मसत्ता विराजमान हो वहां गैरकानूनी प्रथाओं को सामाजिक रूप से अमान्य किये जाने के लिए भी संघर्ष जरूरी है। देखा जा सकता है कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला कहीं से भी पुरुषसत्ता और धर्मसत्ता के वर्चस्व पर प्रहार नहीं करता। वह समानता व न्याय के आधुनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन नहीं करता। आखिर इस सवाल पर वह अपना मत क्यों नहीं देता कि तीन तलाक के मुद्दे पर ड्राइविंग सीट पर महिला क्यों नहीं? स्त्री संगठनों, प्रगतिशील व लोकतांत्रिक समाज को इस दिशा में भी विचार करने और पहल लेने की जरूरत है।

अगस्त, *2017*

-डा. अनीता श्रीवास्तव

शहीद भगत सिंह की परम्परा के क्रांतिकारियों में नागभूषण पटनायक (*27-11-1934 & 09-10-1998*) अग्रणी रहे हैं। अपने जीवन काल में ही वे किंवदन्ति बन गये। उन पर कविताएं, नाटक आदि की रचना हुई। आजाद भारत में उन्हें ऐसे काण्ड में फंसाया गया, सालों जेल में रखा गया तथा मृत्युदण्ड की सजा घोषित की गयी, जो फर्जी साबित हुआ। उनकी रिहाई के लिये देश में आंदोलन हुये जिसमें अनगिनत बुद्धजीवियों ने हिस्सा लिया। हाल में उनकी पुस्तक 'क्रांति की राह में...' वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत हैं उनकी कुछ कविताएं, उन पर लिखी बाबा नागार्जुन की कविता तथा उनके जीवन-वृत्त से परिचित कराती अवधेश कुमार सिंह की टिप्पणी।

नागभूषण पटनायक

○ अवधेश कुमार सिंह

"कोई भी क्रान्तिकारी यह सोचकर क्रान्ति में हिस्सा नहीं लेता कि संघर्ष के दौरान कोई न कोई घटना उसकी जान बचा लेगी" यह कालजयी वाक्य विशाखापत्तनम जेल की कालकोठरी में 15.12.1972 को महान क्रांतिकारी नायक नागभूषण पटनायक ने मृत्युदण्ड की सजा सुनाए जाने के बाद अपने वकील को लिखे पत्र में लिखा था। वह आगे अपने पत्र में लिखते हैं "जल्लाद से मेरी भेंट अभी होनी है, वह फांसी का फंदा कभी भी मेरे गले में डाल कर मेरा जीवन समाप्त कर सकता है, मै उस दिन के लिए पूरी तरह तैयार हूँ और फांसी के तख्ते तक मजबूत कदमो से जाऊँगा मैं, तनिक भी चिंतित नहीं हूँ" ऐसे दृढ़प्रतिज्ञ थे 'लौहपुरुष' नागभूषण पटनायक। वह प्रौढ़ राजनीतिक नेता, विचारक, कवि अर्थात 'आल इन वन' दुर्लभ क्रान्तिकारी नेताओं में से एक थे, जो अपने जीवन में ही 'अद्वितीय' बन जाते हैं। वे न केवल एक दृढ़ कम्युनिस्ट और लोकतांत्रिक शक्तियों के बड़े दायरे के लोकनायक थे बल्कि सी.पी.आई. (एम-एल) की प्रथम केन्द्रीय कमेटी के बच रहे उन कतिपय नेताओं में से थे जो हमेशा पार्टी एकता के प्रतिबद्ध नेता रहे। उनके दिल में गाँव के भूमिहीन गरीब किसानों, आदिवासियों के संघर्षो के प्रति अटूट लगाव था और वे आजीवन उनसे प्राण-प्रण जुड़े रहे।

जेल से रिहा होने के बाद वे सी.पी.आई (एल-एल) से जुड़ गए और इण्डियन पीपुल्स फ्रन्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली।

नागभूषण जी आजीवन पार्टी के एक अनुशासित सिपाही की तरह संघर्ष करते रहे। भारतीय क्रान्ति की सफलता उनका सपना था, और आज भी लाखों क्रान्तिकारियों और करोड़ो उत्पीड़ियों का यही सपना है। उन्हें अपने संकल्प पर पूरा भरोसा था कि शत्रु का कोई भी दमन या हथियार उन्हे डिगा नहीं सकता। रोग शैय्या से वह लिखते हैं-

मो. : *9453563975*

फिर भी मैं मजबूत हूँ और दमदार
कभी भी नशीली दवाएं नहीं घोली देह में-
जो भूल जाऊँ श्रम की महत्ता
न कभी चमड़ी पर लगाया मरहम-
जो सुन्न कर दे क्रान्तिकारी संवेग
हमेशा लड़ता रहा मैं बीमारियों से स्वस्थ मन
मैं शीत की तरह
मेरा स्वास्थ्य तो ढंका है कुहरे से
पर मेरा जीवन है प्रकाश मान